इकाई 3 अन्य शाखाओं एवं विभिन्न अनुशासनों के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान का संबंध

इकाई की रूपरेखा

3.0 प्रस्तावना

3.1 समाजशास्त्र के साथ संबंध

3.2 मनोविज्ञान के साथ संबंध

3.3 इतिहास के साथ संबंध

3.4 अर्थशास्त्र के साथ संबंध

3.5 राजनीति विज्ञान के साथ संबंध

3.6 प्रबंधन विज्ञान के साथ संबंध

3.7 जैव विज्ञान के साथ संबंध

3.8 भाषाविज्ञान के साथ संबंध

3.9 जनसांख्यिकी के साथ संबंध

3.10 दर्शनशास्त्र के साथ संबंध

3.11 सांस्कृतिक अध्ययन के साथ संबंध

3.12 सारांश

3.13 संदर्भ

3.14 आपकी प्रगति की जांच करने हेतु उत्तर

अधिगम का उदेश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत शिक्षार्थी निम्न बातों को समझने में सक्षम होंगेः

- मानव विज्ञान किस प्रकार सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों से जुड़ा हुआ है
- मानव विज्ञान संबंधित ज्ञान सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों को समझने में किस प्रकार उपयोगी है; तथा
- मानव विज्ञान के क्षेत्र में कौन से बड़े परिवर्तन हुए हैं ।

योगकर्ता : डॉ. केया पांडे, मानव विज्ञान विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, प्रोफेसर विनय कुमार श्रीवास्तव द्वारा संपादित पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय.वर्तमान निर्देशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण

3.0 प्रस्तावना

मानवता का वैज्ञानिक अध्ययन ही मानव विज्ञान का अर्थ एवं उद्देश्य है। मानव विज्ञान में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि मनुष्य कौन है, वे किस प्रकार विकसित हुए, वे कैसे दिखते हैं, वे किस प्रकार से बातचीत करते हैं, वे एक विशिष्ट तरीके से क्यों कार्य करते हैं। वृहत तौर पर देखा जाए तो पूरी दुनिया की मानव जाति में शक्ल– सूरत, भाषा एवं व्यवहार में कुछ समानताएं एवं भिन्नता देखने को मिलती है। मनुष्य भी कई अन्य विषयों के लिए अध्ययन का उद्देश्य रहा है। जैव विज्ञान, आविर्भाव, सामाजिक विज्ञान आदि सभी विषय मनुष्य एवं उसके एवं कार्यों से जुड़े हुए हैं।

मानव विज्ञान की कोई निश्चित सीमा नहीं है। इसका अध्ययन किसी भी समूह तक सीमित नहीं है अपितु सम्पूर्ण मानव जाति इसके अध्ययन का विस्तार है। आधुनिक सभ्यताओं, समकालीन उदित राष्ट्रों, औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया, शहरीकरण एवं इस प्रकार के अन्य क्षेत्रों में भी मानवविज्ञानी पूरी तरह से संलग्न हैं। सूक्ष्म तौर पर मानव विज्ञान इस बात पर प्रकाश डालता है कि प्रत्येक समूह के लोगों में अद्वितीय क्या है तथा वृहत तौर पर मानव विज्ञान में प्रत्येक संस्कृति का अन्य संस्कृतियों के साथ संबंध की विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। पिछली इकाई में हमनें सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानव विज्ञान के वृद्धि और विकास पर विमर्श किया। इस इकाई में हम मानव विज्ञान का अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ उसके संबंधों को समझने का प्रयास करेगें।

3.1 समाजशास्त्र के साथ संबंध

सामाजिक–मानव विज्ञान के सबसे समीप जो सामाजिक विज्ञान है उसे समाजशास्त्र कहते हैं। तथापि उनके बीच के संबंधों के बारे में काफी सशक्त एवं भिन्न भिन्न विचार हैं। समाज के अध्ययन हेतु प्रत्येक का दावा न सिर्फ अर्थशास्त्र एवं राजनीति जैसे किसी एक पहलू से संबंधित है अपितु सभी विषयों के साथ जुड़ा हुआ है। समाजशास्त्र सामाजिक मानव विज्ञान से बहुत प्राचीन है, जिसकी शुरुआत फ्रांस में ऑगस्टे कॉम्टे एवं इंग्लैंड में हरबर्ट स्पेंसर से शुरू हुई। मानव विज्ञान के क्षेत्र में ब्रिटिश परंपरा के संस्थापक के रूप में दो लोग प्रसिद्ध हैं जिनमें मालिनोव्स्की और ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन शामिल हैं। इन्होनें उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रांसीसी समाजशास्त्रियों के विचारों को ग्रहण किया तथा ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन ने रॉयल एंथ्रोपोलॉजिकल इंस्टीट्यूट में अपने अध्यक्षीय भाषण में यह कहा कि "यदि कोई यह चाहता है कि इसे तुलनात्मक समाजशास्त्र कहा जाए तो वे इससे सहमत हैं"। बहुत से नए ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान विभाग संयुक्त रूप से शामिल किए गये। हालांकि विश्वविद्यालय दोनों विषयों में अलग-अलग उपाधियाँ प्रदान करते हैं जिसके पीछे कुछ कारण हो सकते हैं। एक सामान्य बात यह है कि यह सिद्धांत के स्थान पर अभ्यास का विषय है, तथा वे भिन्न-भिन्न विषयों को बड़े स्तर पर भिन्न-भिन्न तरीके से निपटते हैं। इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि जिस प्रकार जीव विज्ञान की दो शाखाएं वनस्पति विज्ञान एवं प्राणी विज्ञान हैं, ठीक उसी प्रकार समाज के अध्ययन हेतु समाजशास्त्र और मानव विज्ञान दो शाखाएं हैं। मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र मनुष्य के सामाजिक व्यवहार की व्याख्या और वर्णन करने हेतु तुलनात्मक रूपरेखा प्रदान करते हैं। हालांकि विभिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियों के प्रतिउत्तर में प्रत्येक शाखा का उदय हुआ और विभिन्न परंपराओं के प्रभाव और दृष्टिकोण से उनके परिणाम कुछ हद तक सामने आए, इन दोनों शाखाओं का उदय साझे सिद्धांत से

हुआ और तीव्र गति से ये अनुसंधान पद्धति के सामान्य साधन (टूलकिट) बन गए। मानवविज्ञान एवं समाजशास्त्र के अध्ययन के बाद कोई भी व्यक्ति विश्व के सभी क्षेत्रों के मानव समाजों के वृहद रूप से परिचत हो जाएगा। मानवविज्ञान एवं समाजशास्त्र के अध्ययन के बाद वे सांस्कृतिक जटिलता, ऐतिहासिक संदर्भ एवं वैश्विक संपर्क संबंधी ज्ञान प्राप्त करेंगे जिसके आधार पर समाज एवं सामाजिक संस्थान एक दूसरे से जुड़ते हैं। वे समसामयिक समाजों से जुडे हुए सामाजिक संरचनाओं एवं उनके क्रिया-कलापों के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे, जिसमें किसी भी समाज में मौजूद सामाजिक ताकत एवं विशेषाधिकार शामिल हैं। वे इस बारे में भी जान पाएंगे कि किस प्रकार अक्सर असमान ताकतों को प्राप्त किया जाता है, उन्हें कायम रखा जाता है, उन्हें पुर्नस्थापित और हस्तांतरित किया जाता है।

मानव विज्ञान भिन्न-भिन्न मनुष्यों का तुलनात्मक अध्ययन है। जिसका उद्देश्य मानव समूहों की समानताओं और भिन्नताओं का वर्णन और विश्लेषण करना है। मानवविज्ञानी इस बात में रूचि रखते हैं कि, किसी विशिष्ट मानव समाज में कौन सी बात विशिष्ट है अथवा कौन सी बात सभी पर लागू होती है। वे इस बात में रूचि नहीं रखते हैं कि कौन सी बात असामान्य एवं व्यक्तिगत रूप से अद्वितीय है। मनुष्य की भिन्नताओं का अध्ययन करते हुए मानवविज्ञानी इस बात पर बल देते हैं कि विभिन्न समूहों में क्या भिन्नताएं हैं न कि उन समूहों में रहने वाले विभिन्न लोगों के बीच में क्या भिन्नता है। मानवविज्ञानी मानव की भिन्नताओं का वर्णन करते हुए मानव जीवविज्ञान एवं साझा मानव व्यवहार के तौर-तरीकों को एक साथ जोड़कर देखते हैं ,जिसे हम संस्कृति कहते हैं। मानव के अध्ययन के लिए मानवविज्ञानियों के पास सम्रग दृष्टिकोण होने के नाते वे मनुष्य के सभी क्रिया-कलापों में अभिरूचि रखते हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. सामाजिक मानव विज्ञान विषय हेतु तुलनात्मक समाजशास्त्र का सिद्धांत किसने सुझाया?

   .....

   .....

   .....

2. समाजशास्त्र की विषय–वस्तु क्या है?

   .....

   .....

   .....

   .....

3.2 मनोविज्ञान के साथ संबंध

किसी के व्यक्तित्व की अवधारणा को मनोवैज्ञानिक अध्ययन का आधार कहते हैं। संस्कृति के संदर्भ में व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिए मानवविज्ञानी इस शाखा का संदर्भ ग्रहण करते हैं। गत कुछ वर्षों में व्यक्तित्व की संरचनाओं के अध्ययन हेतु कई महत्वपूर्ण दृष्टिकोण उभर कर सामने आए हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन के अंतर्गत व्यक्तित्व गठन की प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में समाजीकरण और संस्कृतिकरण की मुख्य

अवधारणाओं का इस्तेमाल किया जाता है। व्यक्तित्व विकास के लिए भिन्न-भिन्न समाजों में बच्चों के पालन-पोषण के भिन्न-भिन्न तौर-तरीकों और उनके प्रभावों का अध्ययन और जांच की जाती है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व द्वारा संस्कृति प्रतिबिंबित होती है, और संस्कृति व्यक्तित्व में झलकती है। मनो–मानवविज्ञानी किसी समाज के सांस्कृतिक संस्थानों को दो वर्गों – प्राथमिक अथवा मूलभूत तथा सहायक अथवा प्रक्षेपी में विभाजित करते हैं। इनमें से पूर्ववर्ती में भौगोलिक वातावरण, अर्थव्यवस्था, परिवार, सामाजीकरण की प्रथा, राजनीति शामिल है। जबकि उत्तरार्ध में मिथक, लोकगीत, धर्म, जादू–टोना, कलाएं आदि शामिल हैं। जहाँ मूलभूत संस्थान व्यक्तित्व को निखारते हैं, वहीं व्यक्तित्व द्वारा सहायक संस्थाओं का निर्माण होता है। मनो–मानवविज्ञानियों द्वारा दुनिया के प्रत्येक समाज की संस्कृति और व्यक्तित्व के बीच के संबंध का अध्ययन किया जाता है। मनो–मानवविज्ञानी द्वारा 1920 के दशक तक व्यापक अध्ययन नहीं किए गए थे। कुछ विद्वानों के प्रारंभिक कार्यों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी भी थी। मानव एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं के बीच जो अनेक मूलभूत मानव संघर्ष हैं उनकी व्यक्तिगत स्तर के साथ–साथ सामाजिक स्तर पर भी पूरी तरह जांच होनी चाहिए। इस बात की आवश्यकता को अवश्य महसूस किया गया परंतु न तो मनोवैज्ञानिक और न ही मानवविज्ञानी एकल रूप से सभी समस्याओं का निदान एक ही अनुशासन के समर्थन में कर सकते थे। इस जानकारी ने मनोवैज्ञानिकों एवं मानवविज्ञानियों के बीच दो–तरफा प्रयास की जरूरत को जागृत किया।

अपनी प्रगति की जांच करें

3. मनोवैज्ञानिक अध्ययन का आधार क्या है?

.....

.....

.....

.....

4. मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञानियों द्वारा किस बात पर बल दिया जाता है?

.....

.....

.....

3.3 इतिहास के साथ संबंध

मानव विज्ञान एवं इतिहास द्वारा संस्कृति के मूलाधार, विस्तार एवं विकास का पता लगाया जाता है। यहाँ हमारा तात्पर्य उस युग के बारे में बात करना। जिसमें मनुष्य संचार करने हेतु भाषा का उपयोग नहीं करता था और न ही उसे भाषा को लिखने की दक्षता प्राप्त थी। पुरातत्त्वविदों को मानवविज्ञान के इतिहासकार कहा जाता है क्योंकि वे मनुष्यों की पूर्व घटनाओं का पुर्नसृजन करने का प्रयास करते हैं। हालांकि, इतिहास के विपरीत जो गत केवल 5000 वर्षों से संबंधित है और जिसमें मनुष्य ने अपनी उपलब्धि के रूप में लिखित सामग्री को

हमारे लिए छोड़ा है। जबकि पुरातत्त्वविदों का संबंध उन लाखों वर्षों से है जिसमें मनुष्य ने लिखित शब्दों के बिना संस्कृति को विकसित किया और हमारे लिए अलिखित सामग्री अथवा कलाकृतियों को छोड़ गए हैं।

इसका तात्पर्य यह है कि मानवविज्ञानी अतीत की संस्कृतियों का अध्ययन करते हैं एवं अतीत में लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपकरणों का विश्लेषण करके उन लोगों की तकनीक के बारे में हमें बताते हैं। इसे आधार बनाते हुए यह उन लोगों के आर्थिक प्रयासों पर प्रकाश डाल सकता है जिन लोगों ने वास्तव में ही उस तकनीक का उपयोग किया है। उन लोगों की कलात्मक दक्षता का पता उनके द्वारा बनाए गए विभिन्न सामग्रियों के अवशेष एवं मिट्टी के बर्तन, आभूषण आदि पर उकेरी हुई कलाकृतियों के अवशेषों को देखकर लगाया जा सकता है। उनके घरों के अवशेष इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि उस समय सामाजिक संरचना का स्वरूप कैसा था। उनकी धार्मिक मान्यताओं के कुछ पहलुओं का पता शमशानों के साथ–साथ मृत व्यक्ति के साथ दफनाई गई सामग्रियों को देखकर लगाया जा सकता है।

अतः पुरातात्विक मानवविज्ञानियों का मुख्य तरीका प्राचीन कलाकृतियों का उत्खनन है जिसमें उत्खनन के बाद उस कलाकृति की काल अवधि का अनुमानित समय निर्धारित किया जाता है तथा सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण के लिए विभिन्न अनुमान लगाए जाते हैं। ऐसा करते समय इन सभी प्रयासों में मानवविज्ञानी गत संस्कृतियों के पुनर्निर्माण से संबंधित अध्ययनों पर अन्वेषण के विभिन्न तरीकों से ध्यान केंद्रित करते हैं, जो बहुत प्रसिद्ध सामग्रियों से अज्ञात का पता लगाने का ज्ञात तरीका है।

अपनी प्रगति की जांच करें

5. मानवविज्ञानियों एवं इतिहासकारों का एक समान अध्ययन क्षेत्र क्या है?

.....

.....

.....

6. मानव अतीत की किस अवधि तक का अध्ययन इतिहासकारों द्वारा किया जाता है?

.....

.....

.....

7. पुरातात्विक मानवविज्ञानियों द्वारा मुख्य रूप से किस विधि का उपयोग किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

3.4 अर्थशास्त्र के साथ संबंध

आर्थिक मानव विज्ञान विभिन्न संस्कृतियों की आर्थिक प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन है। आर्थिक लेन–देन एवं आर्थिक प्रक्रिया की प्रकृति में उत्पादन, खपत, वितरण एवं उत्पादों का आदान–प्रदान सम्मिलित है।

मानवविज्ञानी मुख्य रूप से जनजातियों एवं किसानों में इन गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे रीतियों के आदान–प्रदान सहित आदान–प्रदान के विभिन्न तरीकों पर का अध्ययन करते हैं। यहाँ पारस्परिकता एवं पुनर्वितरण का सिद्धांत महत्वपूर्ण है। व्यापार एवं बाजार प्रणाली का माहौल भी उनके अध्ययन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अंततः इन समाजों में अर्थव्यवस्था की प्रगति एवं विकास का अध्ययन किया जाता है। वह बात जो यहाँ ध्यान देने योग्य है वह यह है कि मानव के आर्थिक कार्यों का अध्ययन अलग से नहीं किया जाता है अपितु उसका अध्ययन सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों पर प्रकाश डालते हुए उनके सामाजिक–सांस्कृतिक माहौल के साथ किया जाता है। जो प्रत्येक समाज में आर्थिक गतिविधियों की स्थापना करते हैं और उनमें बदलाव भी करते हैं। इस प्रकार के प्रयासों ने औपचारिकवादियों एवं साजिशवादियों के मध्य बहस को बढ़ाया है अर्थात् जो लोग इस बात को मानते है कि अर्थशास्त्र की इस दिशा में तैयार अवधारणाएं भी सरल समाजों में आर्थिक प्रक्रियाओं को शोधन में पर्याप्त हैं, और जो लोग इस बात से असहमत हैं कि प्रत्येक समाज की अर्थव्यवस्था, संस्कृति में निहित है। इसलिए आर्थिक सिद्धांत मौजूदा मुद्रीकृत प्रणालियों के रूप में केवल दिमागी उपज मात्र है। जिससे सरल समाजों की यथार्थवादी स्थिति प्राप्त नही होती है।

अपनी प्रगति की जांच करें

8. आर्थिक मानव विज्ञान से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 राजनीतिक विज्ञान के साथ संबंध

राजनीतिक मानवविज्ञान निम्नलिखित पहूलओं पर बल देता हैः राजनीतिक प्रक्रिया की सर्वव्यापकता और वैद्य प्राधिकरण के कार्यय सरल समाजों में कानून, न्याय और प्रतिबंधय समतावादी और वर्गीकृत समाजों में राजनीतिक संगठनय शक्ति और नेतृत्व का स्थानय विश्व के समस्त समाजों के बीच मतभेदों एवं एकरूपताओं के आधार पर राजनीतिक ढांचों के वर्गीकरण, सृजन में मानव विज्ञान से संबंधित दृष्टिकोणय उभरते हुए देशों और जटिल समाजों के मध्य राजनीतिक प्रक्रियाय राजनीतिक संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण प्रक्रियाएं। इन सभी पहलुओं के अध्ययन में विश्व की राजनीतिक प्रणालियां सामाजिक, सांस्कृतिक बातों के अंतर्गत आती हैं।

सामाजिक संगठन के व्यापक अवलोकन के तथ्यों का एक भाग मानव का मानव के साथ संबधों से है जोकि समाज और बाह्य सदभावना में आंतरिक क्रम की निरंतरता हेतु योजनाबद्ध है। इनमें से पहले वाले को कानून और व्यवस्था उपकरण, विवादों के निर्णय और न्याय के कार्यान्वयन की किसी प्रणाली के माध्यम से अर्जित किया जाता है और बाद वाले को शांति और युद्ध के परिणामों से अर्जित किया जाता है। मानवविज्ञानी जो सरल समाजों और अन्य समाजों के मध्य प्राधिकरण से जुडे हुए इन सभी तथ्यों और प्रणालियों का अध्ययन करते हैं उन्हें राजनीतिक मानवविज्ञानी कहा जाता है। राजनीतिक मानवविज्ञान सामाजिक– सांस्कृतिक मानवविज्ञान की एक शाखा के रूप में उभरकर सामने आया है जो कि मुख्य रूप से राजनीतिक संस्थानों और संस्कृतियों से जुडे अन्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसे राजनीतिक संगठनों के अंतःसांस्कृतिक और तुलनात्मक अध्ययन के नाम से जाना जाता है।

अपनी प्रगति की जांच करें

9. राजनीतिक मानवविज्ञान का क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

3.6 प्रबंधन विज्ञान के साथ संबंध

वर्तमान समय में संपादकों और विद्वानों के मध्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से मानव संबंधों में किए गए बदलावों की भर्त्सना (कमचसवतम) करने की प्रवृत्ति रही है, यदि हम मानवता की ओर वापस आते हैं और विज्ञान का प्रयोग कम करते हैं तभी मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। हम सभी यह देखते हैं कि प्रौद्योगिकी में बदलाव व्यक्तियों और समूहों के संतुलन को भंग करके अपने परिणामों को पूरा करती हैं। यदि हम प्रौद्योगिकी को अपने साथ आगे ले जाना चाहते हैं तो इसे केवल मानव संबंधों के विज्ञान का प्रयोग करते हुए मानवविज्ञान पद्धतियों का इस्तेमाल करके ही किया जा सकता है। इसने प्रशासकों और दूसरे लोगों को भी इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित किया है। यह न केवल वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु अपितु मानव व्यवहार और संबंधों से जुडे मानवविज्ञान के ज्ञात सिद्धांतों के संदर्भों के माध्यम से अपने उद्देश्य निर्माण करने की कला सीखने के लिए है ।

इसके अलावा, मानव विज्ञान पद्धति और सिद्धांतों का उपयोग प्रशासकों को संस्थान में मानव संबंधों की प्रणाली में संतुलन की स्थिति का अनुमान लगाने में सक्षम बनाता है जिसके लिए वह जिम्मेदार है और आवश्यकतानुसार ऐसे समायोजन करते रहते है। मानव संबंधों के समायिक मूल्यांकन के माध्यम से नियंत्रण के तरीकों को स्थापित करके और किसी भी समय समायोजन की सटीक प्रकृति का निर्धारण करके वे संगठन को पूरा करने में सक्षम होंगे और इसे निर्मित करने वाले सभी व्यक्तियों के लिए अधिक संतोषजनक समायोजन ला सकेगें । हाल ही में प्रबंधन विज्ञान ने इस क्षेत्र को विकसित किया है और मानवविज्ञान पृष्ठभूमि के छात्रों का प्रवेश बढ़ा है। अंर्तवैयक्तिक संबंध और मानव संबंधों के अतिरिक्त दोनों विषय समाज से संबंधित शोध की व्यवहारिकता पर बल देते हैं। यात्रा प्रबंधन, ग्रामीण प्रबंधन, वन्य जीवन प्रबंधन,आपदा प्रबंधन, पर्यावरण प्रबंधन आदि इस संदर्भ के कुछ उदाहरण हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें

10. मानव विज्ञान संबंधी ज्ञान का प्रयोग प्रबंधन विज्ञान में कैसे किया जाता है?

.....

.....

.....

3.7 जैवविज्ञान के साथ संबंध

जैविक मानव विज्ञान के अंतर्गत मनुष्य का एक जीव के रूप में अध्ययन किया जाता है। होमोस्पेसियन की प्रजातियाँ मानव विज्ञान की इस शाखा के जांच की विषय वस्तु हैं। मनुष्य के अध्ययन से जुडे तीन अहम पहलू हैं। वे पहलू हैं: मानव जीव विज्ञान, मानव का विकास और मानव की विविधता। जैविक पहलू में संरचनात्मक, शारीरिक और शब्द–संरचनात्मक (morphological) विशेषताएं सम्मिलित हैं। मानव आनुवांशिकी और मानव की किस्मों का अध्ययन दो महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं जो मानव जीव विज्ञान, विकास और विविधता की जानकारी प्रदान करते हैं। तथापि ये सभी अलग–अलग दृष्टिकोण मनुष्य की जैव भौतिक प्रकृति पर समग्र रूप से प्रकाश डालते हैं।

कोई यह सवाल कर सकता है कि मानव विज्ञान की यह शाखा जैवविज्ञान से किस प्रकार अलग है क्योंकि इसमें भी मनुष्य का जीव के रूप में अध्ययन किया जाता है। यह मनुष्यों की जीवविज्ञान पर व्यापक प्रभाव और संस्कृति के प्रभाव की मान्यता है जो शारीरिक मानव विज्ञान को विशिष्ट बनाती है। मानवविज्ञानी हेतु बहस और चर्चा का सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों में से एक मुद्दा उसके संबंधों (लिंक) का गुम होना है। जीव के वे जीवाश्म अवशेष जो मानव के पूर्वजों की भांति लंगूर और मानव के बीच प्रारंभ और अंतर की वास्तविकता को बताने में सहायता करेंगे जिन्हें अभी तक सर्वसम्मति से न ही ढूँढ़ा गया है और न ही उसे स्थापित किया गया है।

जैववैज्ञानिकों द्वारा विकसित ऑर्गेनिक विकास के सिद्धांतों को मानवविज्ञान अध्ययन में शामिल किया गया है। लैमार्कवाद, डार्विनवाद और सिंथेटिक सिद्धांत जो दूसरे जीवों से प्राप्त प्रमाणों पर आधारित हैं वे मनुष्य की विकास वाली प्रक्रियाओं को समझने में महत्वपूर्ण हैं जोकि अपने आप में जैविक जीव भी हैं। जैविक विज्ञान से अर्जित सूचना के आधार पर मनुष्यों के जैविक विकास के सांस्कृतिक पहलुओं की खोजबीन की जाती है।

अपनी प्रगति की जांच करें

11. जैविक मानव विज्ञान में किस बात पर बल दिया जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

12. मनुष्य के उन तीन महत्वपूर्ण पहलुओं का नाम बताएं जिसका जैविक मानवविज्ञानी अध्ययन करते हैं?

.....

.....

.....

.....

3.8 भाषा विज्ञान के साथ संबंध

मनुष्य की सबसे अहम विशेषताओं में से एक विशेषता भाषा के माध्यम से बातचीत करने की दक्षता है। सामाजिक– सांस्कृतिक मानव विज्ञान की वह शाखा जो मनुष्य की भाषाओं का अध्ययन करती है उसे भाषा–मानव विज्ञान कहते हैं। भाषा–मानवविज्ञानी दो प्रकार से भाषाओं की विविधता की जांच करते है

(1) यह दर्शाया जा सकता है कि संस्कृति भाषा की संरचना और विषय वस्तु को प्रभावित करती है तथा एक अनुमान से भाषागत विविधता सांस्कृतिक विविधता से आंशिक रूप से उत्पन्न होती है।

(2) यह भी दर्शाया जा सकता है कि संस्कृति के दूसरे पहलुओं को भाषागत विशेषताएं प्रभावित करती हैं।

भाषा और संस्कृति के अंर्तसंबंधों को उजागर करने के लिए मानववैज्ञानिकों ने उपरोक्त दो तरीकों का प्रयोग किया है जिसके फलस्वरूप इस विषय पर वाद–विवाद और चर्चाएं हुई हैं। भाषा–मानवविज्ञानी सामाजिक सांस्कृतिक मानवविज्ञानी से बहुत कुछ ग्रहण करते हैं साथ ही उन्हें बहुत सी जानकारियाँ प्रदान करते हैं। प्रत्येक भाषा में शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ एवं सामग्री में कुछ अनूठी बारीकियां होती हैं जिसे केवल वही लोग समझते हैं जोकि उस विशेष भाषा को बोलते और व्यवहृत करते हैं और जो उनकी संस्कृति की उत्पत्ति होती है। कुछ लोगों की भाषा में उनके इर्द–गिर्द की दुनिया की कुछ विशेषताओं हेतु संदर्भित शब्द नहीं हो सकते हैं। ये उन विशेषताओं को इंगित करते हैं जिनका उन लोगों के लिए कोई सांस्कृतिक महत्व नहीं होता है।

भाषाविदों और भाषा–मानवविज्ञान विद्वानों के मध्य सबसे बड़ी भिन्नता यह है कि इनमें से पहले वाला मुख्य रूप से अध्ययन के बारे में चिंतित होता है कि विशेष तरीके से लिखे गए भाषाओं का स जन और संरचना कैसे की गयी है परंतु भाषा–मानवविज्ञानी अलिखित भाषाओं और लिखित भाषाओं दोनों का अध्ययन करते हैं। भाषाविदों और भाषा –मानवविज्ञानविदों के मध्य एक और प्रमुख अंतर यह है कि पहले वाले में जिन विशेषताओं की मंजूरी दी जाती है उन पर बाद वाले में विचार–विमर्श किया जाता है। ये विशेषताएं ज्ञान, विश्वास, मान्यताओं और सम्मेलनों की प्रणालियों से संबंधित हैं जो विशेष रूप से लोगों के मस्तिष्क में विशेष विचारों को जागृत करती हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें

13. भाषा वैज्ञानिक मानवविज्ञानी भाषा की विविधता का किस रूप में आकलन करते हैं?

.....

.....

.....

14. भाषाविदों और भाषा –मानवविज्ञानी के मध्य सबसे बड़ा अंतर क्या है?

.....

.....

.....

3.9 जनसांख्यिकी के साथ संबंध

जनसांख्यिकी सांख्यिकीय रूप से प्रभावित है और प्रमुखतः जनसंख्या के आकार और उनकी संरचना को परिभाषित करने वाली जीवंत शक्तियों और समय तथा स्थान से परे उनकी विविधता से संबंधित होती है। दूसरी ओर मानवविज्ञानी व्याख्यात्मक होते हैं और सामाजिक संगठन पर नजर रखते हैं, कि यह मानव जनसंख्या के उत्पादन और प्रजनन को किस प्रकार आकार प्रदान करते हैं। मानवविज्ञान, जनसांख्यिकीय विषय का एक भाग होता है जो मौजूदा और पिछली जनसंख्या में जनसांख्यिकीय मुद्दों के बेहतर सुधार हेतु मानवविज्ञान सिद्धांत और तरीकों से तथ्य एकत्रित करता है। इसका प्रारंभ और उन्नयन सामाजिक, सांस्कृतिक मानव विज्ञान और जनसांख्यिकी के मध्य स्थान पर हुआ जिसका मुख्य बल प्रवासन पर रहता है, जनसंख्या विशेष रूप से प्रजनन क्षमता और मृत्यु–दर पर बल देती है। कुछ बहुत अच्छे जनसांख्यिकीयविद् विभिन्न मानवविज्ञान पद्धतियों के इस्तेमाल द्वारा संस्कृति के अध्ययन की ओर रूख कर गए हैं। इन दोनों शाखाओं ने एक दूसरे की मदद लेना प्रारंभ कर दिया है। जनसंख्या अध्ययन में इन दोनों विषयों में कुछ सामान्य हितों का आदान–प्रदान किया जाता है।

मानव विज्ञान जनसांख्यिकी में सबसे प्रमुख सैद्धांतिक अवधारणा जिसको सुलझाया जाता है वह है, लैंगिक संस्कृति और राजनीतिक अर्थव्यवस्था। फील्डवर्क और अनुभवजन्य दृष्टिकोण में अनुसंधानों पर लागू मात्रात्मक और गुणात्मक पद्धतियाँ शामिल हैं। इस दृष्टिकोण के लिए एथ्नोग्राफिक फील्डवर्क और प्रतिभागी अवलोकन आवश्यक हैं। जनसांख्यिकी विविध मानव आबादी का सांख्यिकीय अध्ययन है। इसे एक बहुत ही सामान्य विज्ञान के रूप में माना जा सकता है जिसे किसी भी तरह की गतिशील जीवित आबादी के लिए कार्यात्मक रूप से लागू किया जा सकता है।

अपनी प्रगति की जांच करें

15. जनसांख्यिकी का क्या तात्पर्य हैं?

.....

.....

.....

3.10 दर्शनशास्त्र के साथ संबंध

मानव विज्ञान और दर्शनशास्त्र दोनों विषय एक दूसरे से जुड़े हुए हैं क्योंकि दोनों का तार्किक बुनियाद है। इन दोनों समृद्ध विषयों की सीमाएं सदैव भंग होती रही हैं। जैसा कि इससे पहले की इकाईयों में चर्चा की जा चुकी है कि मानवविज्ञान की विषय–वस्तु विश्व भर में विभिन्न संस्कृतियों से संबंधित है। सभी संस्कृतियों के धार्मिक आधार को इन दोनों विषयों के अंतर्गत समाहित करके अध्ययन किया जाता है। मानवविज्ञानविद् कई बार अपना ध्यान दर्शनशास्त्र पर केंद्रित करते हैं और दर्शनशास्त्र की विषयवस्तु को ग्रहण करते हैंय इसी प्रकार अन्य विषयों ने सदैव मानवविज्ञान के निष्कर्षों पर विश्वास किया है। मानवविज्ञानविदों ने सदैव संस्कृ ति की दार्शनिक बुनियाद को मौजूदा संस्कृति और लोगों के वर्तमान वास्तविक जीवन के संग नृवंशविज्ञान (एथेनोग्राफी) की पारंपरिक विधि से जोड़ने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त यदि हम मानवविज्ञान के साथ दर्शनशास्त्र या दर्शनशास्त्र के संयोजन में समाजविज्ञान के बारे में बात करते हैं तो हम यह पाते हैं कि उन्होंने इसमें सहायता की है। जो इस क्षेत्र में निष्पक्ष होने के वर्तमान विचार का वर्णन करने के लिए तथा किसी गैर–नृवंशविज्ञान केंद्रीत दृष्टिकोण जो कई समकालीन सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए अपरिचित थे उसमें भी सहायता की है।

अपनी प्रगति की जांच करें

16. यह बताएं कि निम्नलिखित कथन सही या गलत हैं: ''मानव विज्ञान और दर्शनशास्त्र एक दूसरे से संबधित हैं क्योंकि दोनों का तार्किक आधार है।''

.....

.....

.....

3.11 सांस्कृतिक अध्ययन के साथ संबंध

सामाजिक सांस्कृतिक मानव विज्ञान में मनुष्यों और उनके जीवन के तरीकों का अध्ययन किया जाता है। मानव विज्ञान की इस शाखा के अंतर्गत दो उप–शाखाएं हैं जिसे सामाजिक मानव विज्ञान और सांस्कृतिक मानव विज्ञान कहा जाता है जोकि आपस में जुडी हुई हैं और अंर्तनिहित हैं। जहाँ सामाजिक मानव विज्ञान का संबंध इस बात से है कि लोग खुद को कैसे समूह से जोड़ते हैं जबकि, सांस्कृतिक मानव विज्ञान लोगों की आदतों और रीति–रिवाजों से जुड़ा हुआ है। सामाजिक मानवविज्ञानी के मस्तिष्क में समाज की अवधारणा सर्वोपरि होती है तथा संस्कृति की अवधारणा सांस्कृतिक मानवविज्ञानी के लिए महत्वपूर्ण होती है। 'समाज' एक ही स्थान पर रहने वाले लोगों के समूह को इंगित करता है और समाज जीवित होते हैं। 'संस्कृति' समाज के किसी सदस्य के रूप में मानव द्वारा अर्जित किए गए व्यवहार, ज्ञान, विश्वास, नैतिकता, मूल्य, कला और अन्य सभी रीति–रिवाजों को दर्शाती है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक समाजीकरण और संस्कृतिग्राह्यता (Enculturation) संवर्धन की प्रक्रिया के माध्यम से पहुँचता है।

मानवविज्ञानी का कार्य मानवता के बारे में सामान्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाज और संस्कृति का अध्ययन करना है इस कार्य में दो अहम बातें शामिल हैं; 1– लोगों की इस धारणा को निर्धारित करने के लिए कि उन्हें किस प्रकार का होना चाहिए, तथा 2– यह बताना कि लोग वास्तव में कैसे हैं? सामाजिक सांस्कृतिक मानवविज्ञानी लोगों के समाज और संस्कृति

के किसी क्षेत्र की विशेषताओं को खोना नहीं चाहते। इस प्रकार समाज के अंदर किसी व्यक्ति के जीवन में, गर्भावस्था, यौनावस्था, युवावस्था, मृत्यु से विवाह तक सभी विशेषताएं जो संस्कृति विशिष्ट हैं जिसमें किसी व्यक्ति के जीवन चक्र में प्रत्येक घटना से संबंधित अनुष्ठान और समारोह सम्मिलित हैं उनका सांस्कृतिक अध्ययन के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है।

मानव समाज और संस्कृति में जीवन के सभी क्षेत्रों के बारे में जो जानकारी सामाजिक–सांस्कृतिक मानववैज्ञानिक एकत्रित करते हैं, वे वर्गीकृत, संगठित होती हैं तथा मानव जाति के सिद्धांतों के सृजन के लिए उनका विश्लेषण किया जाता है। मानव विज्ञान के सिद्धांत का इतिहास मानव संस्कृतियों के मूल, प्रसार, विकास, संरचना और कार्य हेतु उत्तरदायी विभिन्न प्रयासों को प्रदर्शित करते हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें

17. सांस्कृतिक अध्ययन में किस बात पर बल दिया जाता है?

.....

.....

.....

3.12 सारांश

मानव विज्ञान का अर्थ और उद्देश्य मानव का वैज्ञानिक अध्ययन है। उनके संबंध में मानव की अंर्तनिहित जिज्ञासा वह प्रमुख कारक थी जिसने इस विषय के उद्‌भव को प्रभावित किया जिसमें व्यवस्थित रूप से मानव जाति का अध्ययन किया गया। मानव विज्ञान अध्ययन के अंतर्गत इस बात का उत्तर ढूँढने का प्रयास किया गया कि मानव कौन है, वह कैसे विकसित हुआ, वह एक विशिष्ट तरीके से कैसे व्यवहार करता है। मनुष्य का अंतिम उद्देश्य केवल मनुष्य, समाज और संस्कृति के बारे में ज्ञान अर्जित करने तक नहीं है अपितु विश्व भर में मानव जाति द्वारा किए जाने वाले व्यावहारिक समस्याओं को दूर करने हेतु ज्ञान को लागू करने में है। इस प्रयास हेतु मानवविज्ञानी आमतौर पर सरकार के प्रशासकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते हैं। मानव विज्ञान समग्र रूप से मानवता को समझने में अभिरूचि रखता है। मानव विज्ञान का संबंध विश्व भर की जनसंख्या चाहे वह बड़ी हो या छोटी, उससे है और कालांतर सहित वर्तमान में भी है।

3.13 संदर्भ

बील्स, आर.एल. होइजर, एच. एवं बील्स, ए.आर. (1959). *एन इन्ट्रोडक्शन टू एंथ्रोपोलॉजी.* न्यूयॉर्कः मैकमिलन पब्लिकेशन कंपनी.

गीर्टज, सी. (1995). *ऑफटर द फैक्टः टू कंट्रीज, फोर डीकेड्स, वन एंथ्रोपोलॉजिस्ट.* कैम्ब्रिज, एम ए. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

होबेल, ई.ए. (1958). एंथ्रोपोलॉजीः द स्टडी ऑफ मैन. न्यूयॉर्क : मैकग्रा–हिल पब्लिकेशन.

लेसवेल, हैरोल्ड डी. (1950). *कंटेम्प्रेरी पोलिटिकल साइंसः ए सर्वे ऑफ मैथड्स, रिसर्च एंड टीचिंग.* यूनेस्को पब्लिकेशन.

मायर, लुसी. (1972). *एन इन्ट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपोलॉजी.* दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

3.14 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

1. ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन ने इस बात का सुझाव दिया है कि सामाजिक मानव विज्ञान को तुलनात्मक समाजशास्त्र कहा जा सकता है।
2. कृपया अनुभाग 3.1 का पहला सारांश देखें।
3. कृपया अनुभाग 3.2 देखें।
4. कृपया अनुभाग 3.3 देखें।
5. कृपया अनुभाग 3.3 देखें।
6. कृपया अनुभाग 3.3 देखें।
7. कृपया अनुभाग 3.3 देखें।
8. कृपया अनुभाग 3.4 देखें।
9. कृपया अनुभाग 3.5 देखें।
10. कृपया अनुभाग 3.6 देखें।
11. कृपया अनुभाग 3.7 देखें।
12. कृपया अनुभाग 3.7 देखें।
13. कृपया अनुभाग 3.8 देखें।
14. कृपया अनुभाग 3.8 देखें।
15. कृपया अनुभाग 3.8 देखें।
16. सत्य ।
17. कृपया अनुभाग 3.11 देखें।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY